|  |
| --- |
| 11. August 2024 |
| **19. Sonntag im Jahreskreis B**  |
| Erste Lesung: 1 Kön 19,4-8; Zweite Lesung: Eph 4,30-5,2; Evangelium: Joh 6,41-51 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 149, 1-3 | Liebster Jesu |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 157 | Herr, erbarme |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 171 | Preis und Ehre |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 34,2-9 |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 39, 1 | Kostet, kostet und seht |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 389, 2+4 | Dass du mich einstimmen lässt |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ich bin das lebendige Brot, das vom Himmel gekommen ist.* |
|  | *Wer dieses Brot isst, wird in Ewigkeit leben.* |
|  |  |
| Credo: | GL 180, 1+2 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 183 | Dir Vater Lobpreis werde |
|  | GL 184, 1-3 | Herr, wir bringen in Brot und Wein |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 198 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 209 | Du teilst es aus |
|  | GL 497, 5  | Denkmal, das uns mahnet |
|  | GL 808, 2!+3 | Dieses Brot sollst du erheben |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 213, 1+4 | O heilge Seelenspeise |
|  | GL 210, 2-4 | So gab der Herr sein Leben |
|  | GL 377, 1+2 | O Jesu |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 382, 1+2 | Ein Danklied sei dem Herrn |